विश्व बन्धुत्व दिवस पर

शान्तिवन डायमण्ड सभागार में

गुजरात हाईकोर्ट के वरिष्ठ न्यायमूर्ति श्री रविराम त्रिपाठी जी का उद्‌बोधन

आज मैं यहाँ आने के बाद जो भावना अपने अंदर महसूस कर रहा हूँ, उसे शब्दों में व्यक्त करना थोड़ा मुश्किल काम है लेकिन जज का काम है, जो भी सुना उस पर जजमेण्ट करना। जब मैं यहाँ आ चुका हूँ और दादी जी का आशीर्वाद मुझे मिल रहा है तो मैं आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। जज होने के नाते मेरा कानून से पाला पड़ता है सुबह से लेके शाम तक और शाम से लेके सुबह तक। दिमाग में एक ही चीज़ चलती रहती है कि जो केस मेरे पास आया है उसमें सच कौन है, जो कागज़ दिये जाते हैं उनसे यह तय करना होता है। सन् 1972 से लॉ से मेरा नाता शुरू हुआ और आज तक चालू है।

यहाँ आने से पहले मुझे लगता था कि लॉ से हम बड़े आराम से (शान्ति स्थापित) कर सकते हैं लेकिन यहाँ आने के बाद मेरा वह भ्रम काफी हद तक टूट चुका है। मैंने यहाँ आकर देखा कि यहाँ लॉ से ज्यादा दादी के प्रति श्रद्धा और समर्पण भाव है। सेल्फ डिसिप्लीन लेकर आप लोग यहाँ आते हैं और इतनी बड़ी सभा में इतनी शान्ति और प्यार से एक-एक शब्द को सुन रहे हैं। उससे मुझे लगता है कि सही मायने में आप लोग बहुत धन्यवाद के पात्र हैं। आप लोग आम जनता से ज़रूर एक कदम नहीं बल्कि अनगिनत कदम आगे हैं। इतने हज़ार लोगों को इकट्ठा करना सिर्फ दो जगह पर संभव होता है। या तो आर्म्स फोर्स का डिसिप्लीन हो या फिर दादी जैसी किसी महान विभूति का अपना कन्ट्रोल हो। मैं सोचता हूँ कि जब ब्रह्माबाबा यहाँ रहे होंगे तो उन्होंने यह ज़रूर सोचा होगा कि उनका बोया हुआ बीज एक विशाल वट वृक्ष बनेगा और आप सब लोग उस वट वृक्ष के हिस्से होंगे। आप उनके सारे शब्दों को साकार कर रहे हैं।

मुझे सिर्फ एक शिकायत है। जजेस की आदत होती है, हर चीज़ के बाद भी उन्हें कोई न कोई शिकायत ज़रूर रह जाती है। दादी जी से भी और आप सब माताओं-बहनों से भी मैं यह कह रहा हूँ कि आप लोगों के पास जो आध्यात्मिक ज्ञान है उसका इन्फेक्शन समाज को ज़रूर लगाइये। इबोला नाम की बीमारी का इन्फेक्शन तो अपने आप लग जाता है लेकिन आप लोगों के पास जो आध्यात्मिक ज्ञान, आध्यात्मिक अनुभव है उसका इन्फेक्शन समाज को कोन्शियसली (सप्रयास) लगाना होगा।

जब ऐसा इन्फेक्शन लगायेंगे तो मैं जो देख रहा हूँ, ये हॉल जो पूरा भरा हुआ है, बहुत से लोग बाहर बैठे हैं, मुझे लगता है कि दादी जी को ऐसे चार हॉल और बनाने पड़ेंगे। मुझे यह बहुत आश्चर्य लग रहा है कि जिस देश में नारी की पूजा होती थी उसमें एक स्टेज ऐसी आई जो नारी को काफी हद तक क्रश (गिराया) किया गया। उसके बाद फिर से एक नया दौर शुरू हुआ जो यहाँ पर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। यहाँ पर इतनी बड़ी संख्या में ऐसी मातायें और बहनें बैठी हैं जिनके दर्शनमात्र से आदमी की अपनी ज़िन्दगी सफल हो सकती है। मैं फिर से यह कहना चाहता हूँ कि आप सब लोग अपना ये इन्फेक्शन कोन्शियसली समाज में हर व्यक्ति को लगायें और एक समय ऐसा आये जब सिर्फ इस शान्तिवन कैम्पस के अन्दर ही नहीं लेकिन बाहर भी इसी तरह का वातावरण सृजन हो जाए, वो मेरे लिए बहुत सुखद दिन होगा। मैं

चाहता हूँ कि यह बहुत जल्दी हो और यह चीज़ आप लोगों से ही हो सकती है। दादी जी की छत्रछाया में रहते हुए, दादी जी का आशीर्वाद लेते हुए शिवबाबा का आशीर्वाद जो आपके पास आ रहा है, आपको उसे सिर्फ थोड़ा-सा फैलाना है। मुझे पक्का विश्वास है कि जब आप उसको फैलायेंगे तो जो सपना मैं देख रहा हूँ वह ज़रूर पूरा होगा, इसमें मुझे कोई शक नहीं।

अभी तक यह कहा जाता था कि लॉ से आप हर चीज़ कर सकते हैं। अब लोगों को पता चल गया है कि लॉ को सिर्फ आप बना सकते हैं और जब लॉ बनता है तो उसके टूटने के केसेज भी बनते हैं और उसके बाद फिर कोर्ट में केसेज बनते हैं। आप लोगों ने न्यूज पेपर में भी पढ़ा होगा कि आज हमारे देश में 3 करोड़ से अधिक केसेज पैन्डिंग हैं। सारे प्रोसेसिज के बावजूद, सारे जजेज मिलकर आज से नये केसेज लेना बन्द कर दें तो भी कुछ दशकों में यह कार्य पूरा कर पायेंगे। लेकिन ऐसा कभी हो नहीं सकता कि समाज होगा और नये केस नहीं आयें, इसलिए नये केसेज आते रहेंगे। ऐसे में सिर्फ एक काम हो सकता है और वह यह है कि आप लोग अपने हर पड़ोसी से ऐसा आपसी प्यार का नाता बनायें जिससे नये केस आने बन्द हों और सब लोग एक ही दिशा में कार्य करें।

दादी जी के प्रवचन सुनने के बाद मुझे ऐसा लग रहा था कि मैं जो बोलूँगा वह आप लोगों को ऐसा लगेगा जैसे चीनी के ऊपर कोई और चीज़ खाने को दी जाए तो वह फीकी लगेगी, दादी जी का इतना अच्छा प्रवचन मैं सुन रहा था। उससे लग रहा था कि मुझे कुछ नहीं बोलना चाहिए लेकिन फिर मुझे लगा कि नहीं मुझे जो आप लोगों के सामने अपनी बात रखनी है, जो आपसे माँगना है वह ज़रूर बोलना चाहिए। दादी जी इस बात से ज़रूर सहमत होंगी कि हमारे पास जो टेक्नोलॉजी है उसका हम प्रयोग कम, दुरुपयोग ज्यादा करते हैं। इस कैम्पस में मैंने देखा कि कहीं भी टी.वी.नहीं है, उसके बावजूद भी सभी खुश हैं तो जब यहाँ हो सकता है तो समाज में क्यों नहीं हो सकता। क्योंकि मेरा यह दृढ़ विचार है कि जो संस्कृति को तोड़ने का काम अंग्रेज़ों की गुलामी ने करीब 200 साल में नहीं किया वह टी.वी.ने पिछले 60 सालों में, उसमें भी पिछले 10 सालों में सबसे ज्यादा किया है। ऐसे में अगर आप बहनें-माताएं अपने घर से यह कार्य शुरू करके, अपनी सोसायटी से और आगे बढ़ाती हैं तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी। टी.वी. का प्रयोग सिर्फ अच्छे कार्य के लिए हो। नेगेटिविटी अपने दिमाग में ना भरी जाये। इसमें अगर आप प्रयत्न करके सफल होती हैं तो मुझे लगता है कि यह सबसे बड़ी समाज सेवा और मानव सेवा होगी।

मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि दादी जी हमारे साथ ऐसे ही बनी रहें और जब भी मुझे यहाँ आने का मौका मिले तो मैं आप लोगों के पास आऊँ, दादी जी इसी तरह से मुझे आशीर्वाद देती रहें। 😊

जिन्दगी आसान है

– निशा गेरा, जनकपुरी, नई दिल्ली –

ज्ञान लेना और देना तो आसान है।
जो करे जीवन में धारण वही देव समान है।
जो चलता ज्ञान दिशा में वही तो महान है।
रहती उसके लबों पर हमेशा ही मुसकान है।
नहीं समझता जो ज्ञान को वही तो परेशान है।
जिन्दगी तो परिस्थितियों से भरा तूफान है।
तूफान को जो समझे तोहफा जीत जाता जहान है।
जब स्वमानों की अन्दर निरन्तर गूँजती तान है।
विषय सागर को पार करना तभी ही आसान है।
अन्दर है करुणा का गुण तभी तू इंसान है।
नहीं तो विकारों से भरा केवल तू हैवान है।
ज़िंदगी ईश्वर का दिया हुआ वरदान है।
प्यार से मुसकरा दिया कर ज़िंदगी आसान है।